पाठ 10

चुहिया की शादी

3X82AI

एक ऋषि ने एक घायल चुहिया को बड़े लाड़–प्यार से पाला। चुहिया जब बड़ी हुई तब ऋषि को उसकी शादी की चिंता हुई। उन्होंने चुहिया से उसके मनपसंद वर के बारे में पूछा। चुहिया अत्यंत शक्तिशाली वर चाहती थी। ऋषि ने चुहिया की पसंद के वर को ढूँढ़ने का प्रयास किया। अंत में उन्हें कौन–सा वर मिला, आओ इस कहानी में पढ़ें।

किसी वन में एक ऋषि रहते थे। वे अपने आश्रम में ही रहकर अपना अधिक समय पूजा–पाठ, ईश्वर का ध्यान करने में व्यतीत करते थे।

एक दिन ऋषि अपनी कुटी के बाहर ध्यान में मग्न थे। अचानक उनकी गोद में चील के पंजे से छूटकर, एक चुहिया आ गिरी। ऋषि का ध्यान भंग हो गया। उन्हें उस अधमरी चुहिया पर तरस आ गया। उन्होंने चुहिया का घाव धोया, उसे दूध पिलाया। चुहिया चार–छह दिन में बिल्कुल ठीक हो गई।

ऋषि अब रोज ही अपने हाथों से चुहिया को खाना खिलाते। वे उसे खूब प्यार करते थे और अपनी बेटी के समान मानते थे। ऋषि के लाड़–प्यार से चुहिया खूब मोटी–तगड़ी हो गई।

चुहिया अब बड़ी हो गई थी। ऋषि को चुहिया के विवाह की चिंता हुई। उन्होंने उससे पूछा, ''बेटी, तुझे कैसा वर पसंद है?'' चुहिया ने कहा, ''पिता जी, मुझे ऐसा वर चाहिए, जो अत्यंत शक्तिशाली हो।''

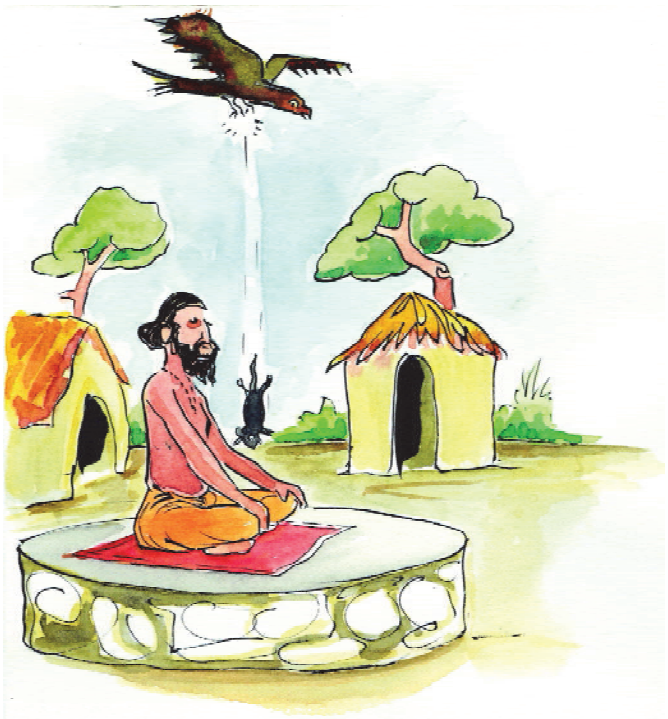

ऋषि ने सोचा, 'संसार में सूर्य से अधिक शक्तिशाली कोई नहीं है। अतः मुझे सूर्य के पास चलना चाहिए।'

ऋषि ने चुहिया को एक सुंदर युवती के रूप में बदल दिया था। वे उसे लेकर सूर्यदेव के पास पहुँचे। सूर्य के पास पहुँचकर ऋषि ने उनसे कहा,

''भगवन्! यह मेरी पुत्री है। यह अपना विवाह एक ऐसे वर के साथ करना चाहती है, जो अत्यंत शक्तिशाली हो। संसार में आपके समान शक्तिशाली और कोई नहीं है। अतः आप इसे स्वीकार कीजिए।''

सूर्य भगवान ने ध्यान लगाकर यह जान लिया कि ऋषि जिसे अपनी बेटी बता रहे हैं, वह तो एक चुहिया है। लेकिन वे ऋषि से स्पष्ट इंकार भी नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने बात बनाकर कहा, ''ऋषिवर! आपका यह कहना ठीक नहीं है कि मैं संसार में सबसे अधिक शक्तिशाली हूँ। मुझसे अधिक शक्तिशाली तो बादल है, जो जब चाहता है, मेरा प्रकाश रोक लेता है। आप कृपया उसी के पास जाइए।''

बात ऋषि की समझ में आ गई। वे चुहिया को लेकर बादल के पास पहुँचे। बादल से भी उन्होंने वही कहा, जो सूर्यदेव से कहा था। बादल ने भी ध्यान लगाया। उसे भी ज्ञात हो गया कि ऋषि चुहिया के साथ मेरा विवाह करना चाहते हैं। उसने थोड़ा विचारकर कहा, ''महात्मन्! आपने मुझे सर्वशक्तिमान समझा, इसके लिए धन्यवाद! परंतु मैं सर्वशक्तिमान नहीं हूँ। मुझसे अधिक तो शक्तिशाली पर्वतराज हिमालय हैं, जो आसानी से मेरा मार्ग रोक लेते हैं। आप कृपया उन्हीं के पास जाइए।''

अब ऋषि पर्वतराज हिमालय के पास पहुँचे। उन्होंने अपने मन की बात पर्वतराज से कही। पर्वतराज ने ध्यान लगाकर सारी बात जान ली। वे ऋषि से बोले, ''ऋषिवर! आप मेरे यहाँ पधारे, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ, किन्तु मैं दुनिया में सर्वशक्तिमान नहीं हूँ। मुझसे अधिक शक्तिमान तो चूहे हैं, जो मेरे अंदर अपने रहने के लिए बिल बना लेते हैं। आप उन्हीं के पास जाइए।''

ऋषि अपने आश्रम में लौट आए। अच्छा मुहूर्त देखकर ऋषि ने अपने आश्रम में ही रहनेवाले एक मोटे–तगड़े चूहे से चुहिया का विवाह कर दिया।

शब्दार्थ

सर्वशक्तिमान	–	सबसे अधिक शक्तिशाली या ताकतवर
आभारी	–	उपकार मानने वाला
मुहूर्त	–	कार्य करने का शुभ समय
आश्रम	–	ऋषि–मुनि का निवास–स्थान
पर्वतराज	–	हिमालय

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. ऋषि को चुहिया कैसे मिली?

प्र.2. चुहिया जब बड़ी हो गई तो ऋषि को किस बात की चिंता हुई?

प्र.3. चुहिया अपने लिए किस प्रकार का वर चाहती थी?

प्र.4. ऋषि ने सबसे अधिक शक्तिमान किसे माना?

प्र.5. बादल ने हिमालय पर्वत को अपने आपसे शक्तिमान क्यों बताया?

प्र.6. ऋषि चुहिया की शादी करने के लिए किस–किसके पास गए?

प्र.7. यदि चुहिया ऋषि की गोद में नहीं गिरती तो उसका क्या होता?

प्र.8. तुम्हारे विचार से संसार में सबसे शक्तिशाली कौन है?

प्र.9. नीचे लिखे वाक्यों को कहानी के क्रम के अनुसार लिखो।

क– ऋषि अपनी पुत्री को लेकर सूर्यदेव के पास पहुँचे।

ख– चुहिया चार–छह दिन में ठीक हो गई।

ग– ऋषि ने एक मोटे–तगड़े चूहे से चुहिया का विवाह कर दिया।

घ– पर्वतराज बोले, ''ऋषिवर, आप मेरे यहाँ पधारे, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।''

ङ– बादल ने कहा, ''मुझसे तो अधिक शक्तिशाली पर्वतराज हैं।''

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे लिखे शब्दों के जोड़ों में से सही शब्द चुनकर लिखो।

ऋषि / रिषि; आस्रम / आश्रम; पर्वत / पव्रत; बिल / बील; ग्यान / ज्ञान; स्वीकार / श्वीकार।

प्र.2 नीचे दिए वाक्यों के खाली स्थानों में | के, | ने, | में, | को, | के | लिए, | से | उचित शब्द का प्रयोग कर वाक्य पूरे करो।

क– उनकी गोद ..... एक चुहिया आ गिरी।

ख– ऋषि हिमालय ..... पास पहुँचे।

ग– बादल ..... भी ध्यान लगाया।

घ– ऋषि चुहिया ..... लेकर सूर्य के पास गए।

ङ– ऋषि चुहिया ..... वर ढूँढ़ने गए।

च– हिमालय आसानी ..... मेरा मार्ग रोक लेता है।

पढ़ो, समझो और लिखो–

बाईं ओर जो शब्द लिखे हैं, वे सब पुरुष जाति के हैं। दाईं ओर के लिखे शब्द स्त्री जाति के हैं। पुरुष जाति के शब्दों को पुल्लिंग और स्त्री जाति के शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं।

शेर – शेरनी

हिरन – .....

बकरा – .....

बिल्ला – .....

मामा – .....

मोर – .....

लड़का– .....

प्र.3 'नदी' शब्द में अंतिम वर्ण है 'दी'। 'दी' से शब्द बनता है 'दीपक'। 'दीपक' में अंतिम वर्ण है 'क'। क से शब्द बनता है 'कमल'। इस तरह शब्द के अंतिम वर्ण से शब्द बनाते जाओ। यह शब्दों की रेल बन जाएगी।

नदी दीपक कमल

शब्दों की इस रेलगाड़ी को आगे बढ़ाओ। शब्दों की रेल का खेल श्यामपट पर लिखकर खेलो।

याद रखो

- कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके लिंग नहीं बदलते जैसे–

  उल्लू, गिरगिट, चमगादड़, कॉपी, लेखनी आदि।

प्र.4 ऐसे अन्य चार शब्द लिखो जिनके लिंग नहीं बदलते।

रचना

नीचे एक बंदर के बारे में कुछ बातें लिखी हैं। इनके आधार पर एक कहानी बनाओ।

क्रियाकलाप–

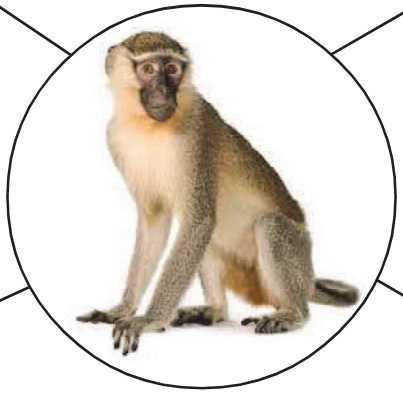

प्र.1 अपनी चित्र–पुस्तिका में चुहिया का चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।

योग्यता विस्तार

- पशु–पक्षियों की एक–एक कहानी हर एक विद्यार्थी कक्षा में सुनाएगा।
- अगर ऋषि को बिल्ली का घायल बच्चा मिलता तो कहानी कैसे बनती? सभी विद्यार्थी मिलकर कहानी बनाएँ।
- स्त्रीलिंग–पुल्लिंग बनाने का खेल खेलो। कक्षा का एक समूह एक शब्द बोलेगा दूसरा समूह उसका लिंग बदलकर बताएगा।

शिक्षण–संकेत

- कहानी को हाव–भाव के साथ सुनाएँ और अनुकरण वाचन कराएँ। पाठ समाप्त करने के पश्चात् कहानी का सार विद्यार्थियों से पूछें।
- बच्चों को समूह में पढ़ने का अवसर दें।